शहर और गाँव

शहर और गांव दोनो के बीच है-फासला।
गांव के बच्चे देखपाते हैं
भोर की पहली किरण ।
और पहचानते हैं, सूरज के उगने की दिशा।।
शहर के बच्चे ऑख खोलते हैं तो देखते है,
आकाश की ओर सिर उठाए भवन।
और अगूंठा दिखाती धूप।।

गाँव के बच्चे मुर्गे की बांग का अर्थ समझते हैं।
शहर के बच्चों के लिए,
किताब में पाया गया महज एक पक्षी।।

गाँव के बच्चे आंगन में कौव्वे के राग अलापने पर,
पहुना के आने का रास्ता देखते हैं।
शहर में आगंन की जगह,
लेती जा रही है बटवारे की दीवार।
और छत में बैठे कैव्वे के हिस्से में,
हाथ में उठाया हुआ एक पत्थर।।

गाँव के बच्चे अपलक निहारते हैं,
जब तस्वीर बनाती है डूबती सांझ।
लौटते पशु और उड़ती धूल।।
शहर के घरों की दिवारों में टांगी है तस्वीरें।।
गांव के बच्चे देख पाते है,
लह लहाती धान की बालिया।
फसल से बतियाते किसान, पैरावट के पहाड़
बांस का कोमल अंकुर, गीत गाती कोयल,

शहद के छत्ते, सावन का झूला।।
पर शायद किसी दिन यह सब छिन जाए उनसे।
क्योकि शहर अपने में लपेटे जा रहा है,
गांव के खेत खलियान।।
दोनों के बीच है भय का फासला।
जाने किस दिन शहर,
यह फासला तय कर लें।।

सतीश कुमार कश्यप, संदेशवाहक